

एनएसएस का रिजल्ट खराब नहीं बेहतर करे मैनेजमेंट

एजुकेशन रिपोर्टर भिलाई

छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) का सर्टिफिकेट परीक्षा अप्रैल में होने जा रही है। इसका प्रतिशत पिछले साल की अपेक्षा बढ़ाने पर जोर प्रबंधन ने दिया है।

सीएसवीटीयू एनएसएस के को-ऑर्डिनेटर डॉ. एसआर ठाकुर का कहना है कि संबद्ध कॉलेजों को बेहतर रिजल्ट के लिए स्टूडेंट्स का सहयोग करने को कहा गया है। कुछ कॉलेज मैनेजमेंट की वजह से वहां एनएसएस की गतिविधियां सहित रिजल्ट तक प्रभावित होते रहे हैं। इस

बार ऐसी स्थिति न बने, इसलिए पहले से अलर्ट कर दिया गया है। रोजगार की आवश्यकताओं के अलावा एक बेहतर इंसान बनाने की सीख एनएसएस कैडेट को दी जाती है। डॉ. ठाकुर के मुताबिक देश में केरल में सबसे ज्यादा एनएसएस पर काम चल रहा है। दूसरे या तीसरे नंबर पर छत्तीसगढ़ है। ऐसे में इसका ग्राफ बढ़ा कर नंबर एक पर ले जाना है। इस मकसद से सभी कॉलेजों से सहयोग करने को कहा गया है। एनएसएस के अध्यक्ष कुलपति होते हैं। इसलिए कुलपति की मंशा के अनुरूप कार्य करना संबद्ध कॉलेजों का दायित्व है। सीएसवीटीयू के 80 में से 52 कॉलेजों में एनएसएस कार्य कर रहा है।

स्थापना के वक्त और थी खराब स्थिति

स्थापना के वक्त और थी खराब स्थिति सीएसवीटीयू की स्थापना 2005 में हुई। इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स का रुझान इस क्षेत्र में कम था। 2009 में एनएसएस की नींव पड़ी और बीआई, रूंगटा में ही पहले शुरुआत हुई। उस वक्त सी-सर्टिफिकेट के लिए महज 2 से 3 प्रतिशत स्टूडेंट्स ही पास हुए। वहीं बी-सर्टिफिकेट में 5 प्रतिशत स्टूडेंट्स कामयाब हुए। मौजूदा समय में दो साल के सर्टिफिकेट कोर्स के लिए हर कॉलेज में 100-100 स्टूडेंट्स एनएसएस में रजिस्टर्ड होते हैं। इनमें से बी-सर्टिफिकेट में 30 से 40 प्रतिशत स्टूडेंट्स ही पास हो रहे हैं। इसी तरह सी-सर्टिफिकेट में 15 प्रतिशत स्टूडेंट्स पास हो रहे। इस लिहाज से इसका ग्राफ बढ़ाने पर विश्वविद्यालय जोर दे रहा है।



यह सीखते हैं कार्यकर्ता

- खेल ■ परेड ■ सेल्फ डिफेंस ■ साहित्यिक व कल्चरल प्रोग्राम ■ रक्तदान ■ पौधारोपण ■ सिक्युरिटी

कैंप एक्टिविटी का यह होता है शेड्यूल

- 7 दिन के कैंप में एक कॉलेज से 50 स्वयंसेवक गांव में डालते हैं डेरा
- सुबह 6 से 7.30 बजे तक योगा, पीटी, व्यायाम व रैली
- 8 बजे नाश्ता और आराम
- 1.30 बजे से गांव के सरपंच को साथ लेकर श्रमदान
- दोपहर 1 से 2 बजे के बीच भोजन व 3 बजे तक

आराम

- 3 बजे से बौद्धिक चर्चा, एक्सपर्ट के जरिये
- शाम 4 से 5 बजे तक गांव वालों को साथ लेकर खेल-कूद
- शाम 6 बजे से गांव का सर्वे, समस्याओं को चिन्हित करना, रात 8 बजे भोजन
- रात 9 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति और 10 बजे सोने का समय